7. अफ़ग़ानिस्तान में मोहयाल दत्त जाति का राज

870 ई तक, काबुल के राज्य पर, वहां के ब्राह्मण वज़ीर 'कल्लर' का शासन हो गया था. उस ने एक कुशल सेनापति को अष्टांगी सेना देकर अफ़ग़ानिस्तान के उत्तरी भाग पर आक्रमण करने के लिए भेजा. यह सेनापति अफ़ग़ानिस्तान के उत्तरी क्षेत्र के मुस्लिम अधिकारी को पराजित कर के मजारे शरीफ से सुचारू रूप से शासन चलाने लगा. [भारत की इस विजय की जानकारी मजारे शरीफ से प्राप्त शिला लेख से मिली है]. उस के सैनिक और शासन कौशल से प्रसन्न हो कर ब्राह्मण वज़ीर ने उसको सामन्तदेव के नाम से काबुल राज्य के सिंहासन पर सुशोभित तर दिया. **सामन्तदेव आज की मोहयाल दत्त जाति का पूर्वज था. उस का राजवंश इतिहास में ब्राह्मण हिन्दू शाही के नाम से जाना जाता है.**

सामन्तदेव ने , कल्लर के समान 'वृष और अश्वारोही' वाले सिक्के चलाये जो अंतर्राष्ट्रीय व्यपार में बहुत लोकप्रिय हो गए. सिक्कों पर अंकित बैल **(**नन्दी**)** और त्रिशूल से पता चलता है कि यह नये शासक शिव के उपासक थे जबकि इस से पूर्व के राजा बौद्ध धर्म के पोषक थे. सिक्कों के ऊपर अस्त्र (भाला) उठाये अश्वारोही का अंकन नए शासन की शक्ति का द्योतक है.

ज़ाबुलिस्तान के हिन्दू राज का अंत हो जाने पर शाहि अपनी राजधानी काबुल से स्थानांतरित कर के **उदभाण्डपुर** (वैहिन्ड या अण्ड) ले आये जो अट्टक से चौदह मील ऊपर सिंध नदी के दायें हाथ पर स्थित है. किसी इतिहासकार ने अनुमान लगाया होगा के सीस्तान के अमीर याक़ूब ने अफ़ग़ानिस्तान के कई छोटे राज्यों के साथ काबुल भी जीत लिया होगा जिसके कारण शाहियों को अपनी राजधानी काबुल से उदभाण्डपुर ले जानी पड़ी. सब लेखक यही दोहराते रहे. परन्तु यह पूर्णतया मिथ्या है. याकूब, और उस क्षेत्र के सब से बड़े राजा, शाही, के साथ काबुल में किसी युद्ध का कोइ संकेत नहीं है. उद्भाण्डा से काबुलशाहियों का गौरव उसी प्रकार बना रहा और पड़ोस की किसी मुस्लिम शक्ति ने उनके साथ छेड़ छाड़ का साहस नहीं किया. याकूब ने अपने सिक्के पंजशीर से चलाये. यदि काबुल उस के आधिपत्य में होता तो वह अवश्य अपनी मुद्रा द्वारा इस को घोषित करता. काबुल और सीस्तान के बीच जाबुल का हिन्दू अन्तर्रोधी राज्य (buffer state) नष्ट हो जाने से, ठीक समय पर किया गया, यह सामरिक महत्व का सही निर्णय था.

कश्मीर के इतिहास "*राजतरंगिणी*" में उसके 'लल्लिय शाही' नाम से बहुत रोचक विवरण है.

> *अलखान का संरक्षक, विख्यात लल्लिय शाही - जिसका राज्य दारद और तुरुष्क शासकों के बीच (फंसा) है ... जिस के उदभण्ड नगर में अन्य राजा आश्रय लेते हैं ... जिसका पराक्रम और यश उत्तरापथ के अन्य शासकों से अधिक है, जैसे सूर्य की चमक आकाश के अन्य नक्षत्रों से तीव्र होती है ... शंकर वर्मन उस (शाहि) को सार्वभौम सत्ता से हटाना चाहता था.*

उस समय सामन्तदेव उत्तर-पश्चिम भारत का सब से विख्यात' और शक्तिशाली शासक था जसकी राजधानी में अन्य राजा आश्रय लेते थे.

कमलवर्मन: सामन्तदेव के पश्चात उसका पुत्र कमलवर्मन, सम्भवता 895 ई में, अभिषक्त हुआ. तब तक सफ़ार राज्य की बागडोर याक़ूब-ए-लईस के भाई अमर-ए-लईस के हाथ में आ चुकी थी और ज़ाबुलिस्तान भी उसके आधीन था. शायद खलीफा के उकसाने पर अमर आक्सानिया पार कर के सामानी राज्य से संघर्ष कर रहा था पर पड़ोस के ब्राह्मण शाहियों से उस ने कोई छेड़ छाड़ नहीं की थी. परन्तु अमर द्वारा ज़ाबुलिस्तान में नियुक्त किये गए नये गवर्नर (सूबेदार) फर्दगन ने एक अटपटी स्थिति उत्पन्न कर दी. वह अपनी सेना लेकर हिन्दुओं के एक पवित्र धर्मस्थल साकावण्ड गया, वहां मंदिर की सब मूर्तियाँ तोड़ डाली और मूर्तिपूजकों का विनाश कर डाला. "कमल (कमलवर्मन) जो हिन्दुस्तान का राजा था, उसको जब इस विध्वंस की सूचना मिली तो उसने एक विशाल सेना एकत्रित की और ज़ाबुलिस्तान की ओर प्रस्थान किया जहां साकावण्ड स्थित था. मुहम्मद ऊफी के कथनानुसार, जो वृतांत सभी इतिहासकार दोहराते हैं, फर्दगन ने एक अफवाह फैला दी कि अमर-ए-लईस एक भारी सेना लेकर स्वयं आ रहा था और इस जानकारी से कमलवर्मन जहां था वहीं रुक गया. परन्तु एक और खोजकर्ता ने सिद्ध किया है कि यह बहु-उद्धृत ऊफी का वृतांत सत्य नहीं है. "*तारीख़ सीस्तान*" के अनुसार दो हिन्दू राजे अपनी संयुक्त सेनाओं के साथ आये और ग़ज़नी पर आक्रमण कर दिया. कमलवर्मन का उल्लेख राजतरंगिणी में भी आता है. उस में एक "शाही विग्रह" के बारे में लिखा है कि एक शाही द्वारा राजसिंहासन के अनाधिकृत ग्रहण पर कश्मीर राज्य ने हस्ताक्षेप कर के कमलवर्मन को पुनः वहां सुशोभित कर दिया.

भीमदेव का, तत्पश्चात, उत्तराधिकारी के रूप में राज्याभिषेक हुआ. *देवई शिलालेख* में उसको "गदाहस्त, परम भट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर श्री भीमदेव" वर्णित किया गया है. उसने एक स्वर्ण मुद्रा चलाई जिसके मुख की ओर "श्री भीमदेव" और पृष्ठ पर "श्रीमद गुणनिधि श्री सामन्तदेव" अंकित है. अपने पूर्वज (दादाश्री) के प्रति यह एक अभूतपूर्व मार्मिक तथा भावुक श्रद्धांजलि है.

चंदेल राजा ढंग वि. सँ. 1011 (954-55 ई) की *खुजराहो शिलालेख* में एक अत्यंत रोचक वृतान्त अंकित है. इसके अनुसार "भोटा नरेश को कैलाश (तिबत) से वैकुंठ की प्रतिमा प्राप्त हुई. उन से यह कीरा नरेश को मैत्रीवश उपहार स्वरुप मिली. उनसे शाहि को मिली. तदुपरांत हरम्बपाल (महिपाल) ने हाथी-घोड़ों के बल के बदले इसे शाही से प्राप्त किया." इसमें आगे वर्णित है कि अंततः यशोवर्मन ने खुजराहो में एक अत्यंत सुंदर मंदिर बनवा कर इस मूर्ती को वहां प्रतिष्ठित कर दिया. कन्नौज के गुर्जर प्रतिहार वंश के नरेश महिपाल (लगभग 914-948) भीमदेव के समकालीन थे जिसे इस अभिलेख में शाही कहा गया है. इस से स्पष्ट हो जाता है के भीमदेव अपनी सैनिक तैयारी के बारे में पूरी तरह जागरूक थे और अपनी अश्वारोही सेना तथा अन्य सेना बलों को युद्धपरक बनाये रखने के लिए प्रयास करते रहते थे.

‘सफारी’ राज्य की कमज़ोरी का लाभ उठाते हुए, शाहियों ने पश्चिमी सीमा पर अपनी गतिविधियां और तेज़ कर दीं और ग़ज़नी में अपना मित्र राज्य स्थापित कर दिया. ग़ज़नी के "लवीक" उपाधि से जाने वाले हिन्दू शासक सुरक्षा और सहायता के लिए भीमदेव की शरण में आते थे.

भीमदेव की एक ही बेटी थी और कोई पुत्र नहीं था. उस का विवाह सिंहराज नाम के राजा से हुआ जो कि ‘लोहर और अन्य शक्तिशाली गढ़ों का स्वामी’ था. मोटे तौर पर यह अब कश्मीर में पुंछ और राजौरी का क्षेत्र माना जाता है. इस विवाह से उत्पन्न उन की पुत्री, दिद्दा, का विवाह क्षेमगुप्ता से हुआ जो वहां का राजा बना (950-958). इस रानी के पराक्रमी नाना भीम शाही ने कश्मीर में मार्तण्ड के समीप अति सम्पन्न "भीमकेशव" मंदिर बनवाया.

अन्य कई संतों और सामंतों की मान्यताओं के अनुरूप वृद्धावस्था में भीमदेव ने भी स्वेच्छा से प्राण त्याग कर अपने आप को भगवान शिव को अर्पित कर दिया. उस समय उसकी राज सत्ता उस क्षेत्र में चर्मोत्कर्श पर थी और पड़ोस से किसी शत्रु का भय नहीं था. क्योंकि यह उसका अपना पूर्वनियोजित निर्णय था इसलिए वह योग्य उत्तराधिकारी भी स्वयं नियुक्त कर सकता था. इस रोचक तथ्य की जानकारी अफ़ग़ानिस्तान से मिली "*जयपाल के समय की हुण्ड शिलालेख*" में है. (पुस्तक *अफ़ग़ानिस्तान रीविज़िटिड* में , पृ. 170-172 पर उपलब्ध है)